भारतीय राजनीति के प्रखर प्रवक्ता : डॉ0 राममनोहर लोहिया

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ.प्र.)

डॉ0 राममनोहर लोहिया ने कहा था कि इंसानी जिंदगी को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, अथवा सांस्कृतिक दायरों में कैद करके कदाचित निरूपित नहीं किया जा सकता है वरन् उसके लिए समग्र चिंतन दृष्टि की दरकार है । डॉ0 लोहिया ने समाजवादी मूल्यों और आदर्शों को केंद्र बिंदु में रखकर एक समतामूलक समाज को निर्मित करने का सपना देखा। डॉ0 लोहिया अक्सर कहा करते थे कि मैं चाहता हूं कि इंसान की जिंदगी में राम की मर्यादा, कृष्ण की उन्मुक्तता, शिव का संकल्प, मुहम्मद की समता, महावीर–बुद्ध की रिजुता और यीशु की ममता सब एक साथ ही समाहित हो जाएं। हकीकत में दरअसल डॉ0 लोहिया ने अपने निजी जिंदगी में भी इस स्थिति को बनाने और साधने की भरपूर कोशिश कर इसे अंजाम भी दिया। डॉ0 लोहिया यह भी कहा करते थे कि मेरा तो जन्म ही राम की धरा पर हुआ है। राम की मर्यादा के डॉ0 लोहिया बहुत कायल रहे और रामायण मेला आयोजित करने के वह सूत्रधार बने। यह एक अत्यंत विडंबनापूर्ण तथ्य है कि अकसर लोग डॉ0 लोहिया जी को एक मर्यादा तोड़क के तौर पर निरूपित करते रहे। यह संभवतया इसलिए भी हुआ कि अपनी अभूतपूर्व मौलिकता के कारण डॉ0 लोहिया ने इस तरह का क्रांतिकारी आचरण किया कि उनकी मर्यादाएं घिसीपिटी रूढिग्रस्त मर्यादाओं से विलग प्रतीत होती हैं। उदाहरण के लिए विवाह के प्रश्न पर उनकी अवधारणा नारी पुरूष के मध्य पराम्परागत रिवाजों पर निर्मित नहीं हुईं।

डॉ0 लोहिया को आजादी के पहले और बाद में 18 बार कैद हुई। जितनी बार वे जेल जाते, अपना सिर मुड़ा लेते, मानो सन्यास ले रहे हों। एक बार जब सन् 1944 ई0 से सन् 1946 ई0 तक वे लाहौर किले में कैद थे तो पूछताछ के लिए डॉ0 लोहिया को लगातार 13 दिन और 13 रातों तक सोने नहीं दिया गया। डॉ0 लोहिया की नाक से खून बहने लगा और वे गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गए, परन्तु अंग्रेज सरकार को डॉ0 लोहिया ने कोई जानकारी नहीं दी। जेल में डॉ0 लोहिया का दार्शनिक चिन्तन और भी गहन हुआ। उन्होंने कहा–'भय हमेशा भविष्य का होता है। वर्तमान तो मनुष्य हमेशा सह जाता है, या फिर वह मर जाता है। डॉ0 लोहिया मृत्यु के अंतिम पड़ाव पर थे तब भी वह वंचित, दलित एवं निर्धन करोड़ों लोगों के बारे में सोचकर कह उठे थे–'एक बीमार के लिए इतने डॉक्टर। जानते हो, करोड़ों लोग देश में ऐसे हैं जो जीवन–भर में कभी एक डॉक्टर का मुंह भी नहीं देख पाते। अपनी मृत्यु शय्या पर भी देश की चिंता करते हुए ही डॉ0 लोहिया ने अंतिम सांस ली। डॉ0 लोहिया को दुनिया से कोई विशेष लगाव न था, न डॉ0 लोहिया ने कोई विरासत बनाई थी। डॉ0 लोहिया तो विश्व–नागरिक थे। उनका प्यार और स्नेह एक रूप होकर मानवता के वृहद प्यार से मिल गया था। डॉ0 लोहिया ने संसार के महान व्यक्तियों के साथ कंधा से कंधा मिलााकर काम किया ,लेकिन गरीब की कुटिया में रहने व उनके साथ खाना खाने में भी कभी नहीं

चूके। फटेहाल और बदबू निकलने वाले लोगों से भी गले मिलते थे और कहते थे ''उनका दिल तो देखो''। डॉ0 लोहिया ने हमेशा अपने दिल की सुनी। उन्हें हर प्राणि मात्र से प्यार था। वह एक महान समाजवादी थे, समाजवादी दल के निर्माताओं में थे और न ही इसलिए कि वह स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे वरन् इसलिए कि वह भारतीय गण राज्य के गरीब, पीड़ित और पिछड़े लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे। उनका कोई प्रान्त नहीं था, कोई जाति नहीं थी, कोई वर्ग नहीं था ,वह प्रान्तहीन, जातिहीन, वर्गहीन, बेघर, भारतीय गणराज्य के नागरिक थे और अपने जैसे लाखों लोगों के साथ उन्होने भारतीय गणराज्य के जन्म में योग दिया था और गणराज्य के पौधे को समाजवाद, लोकतंत्र और आदर्शों के साथ बढ़ने में मद्द की थी।

डॉ0 लोहिया देश के समाजवादी आन्दोलन के पूर्णरूप से निःस्वार्थ और समर्पित नेता थे। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और आराम की कभी भी परवाह नहीं की। इसका लाभ उनके सहयोगी मित्र उठाते थे, यहाँ तक कि उनके दैनिक उपयोग की वस्तुओं, उनके कपड़े, पेन, घड़ी और दाढ़ी बनाने का ब्लेड तक उठा ले जाते थे। उनके पास कम से कम उपभोग की वस्तुएं रहती थी और वे भारत जैसे गरीब देश में इससे अधिक सुविधाओं की अपेक्षा भी नहीं रखते थे। डॉ0 लोहिया किसी से भी वे कीमती उपहार तक नहीं स्वीकार करते थे । डॉ0 लोहिया का मानना था कि यदि देश के नेतागण इस दिशा में उदाहरण प्रस्तुत नहीं करेंगे, तो देश का अहित होगा। जीवन के अन्तिम वर्षों में देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए भारत के भविष्य के प्रति चिन्तित रहने लगे थे। सरकारी अफसरों की पतनोन्मुखी स्तर सामान्य जनता का गिरता स्तर, भ्रष्टाचार, आतंकवाद और चरित्रहीनता से वे व्यथित थे। डॉ0 लोहिया का जीवन एक सच्चे समाजवादी का था। उन्हें प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम था जो दिल का सच्चा, कर्मठ व परिश्रमी था। चाहे वह गरीब किसान हो अथवा किसी होटल में काम करने वाला बैरा ही क्यों न हो। वे सभी से उसी अपनेपन से बात करते थे और प्रत्येक व्यक्ति को आदर से पुकारते थे। कोई कितना ही छोटा और निम्न वर्ग का क्यों न हो अभद्रता से सम्बोधित करना उन्हें नहीं आता था।

डॉ0 लोहिया ने बार–बार कहा कि कथनी और करनी में एकता होनी चाहिए जब तक कथनी और करनी में एकता नहीं होगी तब तक न ही देश बन सकता हैं न ही व्यक्ति बन सकता है न समाज बन सकता है न विश्व बन सकता हैं इसलिए कथनी और करनी में एकता करो ताकि समाजवादी राजनैतिक शक्ति के तौर पर डॉ. लोहिया की इस कसौटी पर खरे उतर सकें। विशेष तौर पर लोहिया जी की माला जपने वाले उन्हें मसीहा मानने वालों के व्यवहार उनके द्वारा की जा रही उपेक्षा के बारे में सोचना चाहिए।

डॉ0 लोहिया की दृष्टि में नेहरू, कांग्रेस और सत्ता दोनों का पर्याय थे, परन्तु डॉ0 लोहिया ने कभी नेहरू के व्यक्तिगत जीवन पर कीचड़ नहीं उछाला। लेकिन जिसके कारण देश को नुकसान उठाना पड़ रहा था अथवा भविष्य में उठाना पड़ सकता है, ऐसी नीतियों के लिए उन्होने नेहरू की कड़ी आलोचना करने से गुरेज नहीं किया। देश को दुर्भाग्य की ओर ले जाते देख वे व्याकुल हो उठते थे और विरोध की मुद्रा धारण कर सामने आ जाते थे। डॉ0 लोहिया के अक्रामकता की एक झलक चीनी आक्रमण पर बोलते हुए मिलती है जिसमें उन्होने कहा था कि ''चीन हमारे देश पर हमला किये हुए है, युद्ध चल रहा है फिर भी भारत राष्ट्र संघ में चीन की सहायता के लिए पैरवी करता है। कोई लाडला अपनी माँ के बलात्कारी के साथ अपनी मां की शादी करवाने की इच्छा करे, यह कैसी बात है''–डॉ0 लोहिया के इस कटु बयान से संसद में

कुछ सांसदों ने उनका विरोध किया। डॉ0 लोहिया ने सरकार की दाम–नीति, पंचवर्षीय योजना आदि सबकी बखिया उधेड़ दी थी, गुलजारी लाल नन्दा जो उस समय योजना मंत्री थे, ने डॉ0 लोहिया की बहस का जवाब देना शुरू किया बाद में डॉ0 लोहिया ने नन्दा की बहस का उत्तर देते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश जैसे गरीब प्रदेश का यह दुर्भाग्य है कि मुझ जैसा निकम्मा आदमी और प्रधानमंत्री जैसा अज्ञानी आदमी इस सूबे का प्रतिनिधित्व यहाँ करते हैं। जब उनकी बहसों की आलोचना करते हुए उनके ऊपर दोषारोपण लगाया जाता था कि वे संसद में ऐसी बातें करते हैं जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का सिर नीचा होता है तो डॉ0 लोहिया कहते थे कि ''सत्य के प्रकाशित होने से राष्ट्र का सिर नहीं नीचा होता, संसद को तो आइने के समान होना चाहिए, जिसमें राष्ट्र का मानस साफ–साफ चित्रित हो।'' जनता के रिश्तों पर बहस करते हुए डॉ0 लोहिया कहा करते थे कि ''मतदाता को चाहिए कि तवे के ऊपर जैसे रोटी उलटी–पलटी जाती है, इसी तरह सरकारों को भी उलटती–पलटती रहे, ताकि वह यथास्थितिवादी न हों।''संसद में बोलते हुए उन्होंने कहा था कि जिंदा कौमें पांच साल तक खामोश नहीं बैठतीं, वह या तो सरकारों को शुद्ध करती हैं, या उन्हें हटाती हैं।

डॉ0 लोहिया केवल घोषणाओं और भाषणों तथा नारों तक ही नही सीमित थे ,वे केवल किताबों व अखबारों एवं रेडियों समाचारों की सुर्खियों तक ही नहीं थे बल्कि जन हित के लिए एक ठोस कार्यक्रम व इन कार्यक्रमों को व्यावहारिक रूप देने की कोशिशें भी करते थे। इसलिए डॉ0 लोहिया ने भूमि सेना, सिंचाई, एक घंटा देश के लिए देना, परिवार के आधार पर कृषि व लघु उद्योग, जाति तोड़ो अभियान, स्त्री पुरूष की समानता व चौखम्भा शासन व्यवस्था का विचार उनके समाजवाद के व्यावहारिक पक्ष को उजागर करते हैं। डॉ0 लोहिया देश में ही नहीं वरन् विश्व स्तर पर हर प्रकार के भेद भाव की समाप्ति के लिए एक ऐसी जमात खड़ी करना चाहते थे जो जीने के समानाधिकार की संस्थापना कर सके। किसी का इसलिए अपमान हो कि वह बहुत छोटा है या उसका रंग काला है अथवा वह निर्धन है यह उन्हें कतई पसंद नही था। डॉ0 लोहिया का मानना था कि सम्मान, न्याय और स्वतंत्रता से परे मनुष्य की कल्पना नहीं की जा सकती है। डॉ0 लोहिया ने विश्व परिवार की अवधारणा पर बल दिया। वह तो भारत पाकिस्तान तथा अन्य एशियाई देशों को मिलाकर एक महासंघ की कल्पना करते थे।

एक बार लोकसभा में झूठ शब्द के इस्तेमाल पर कांग्रेस दल के सदस्यों ने आपत्ति जताई तो उनका उत्तर था कि सामान्य वर्ग इसी 'झूठ' शब्द का इस्तेमाल करता है और समझता है। ''आज वे संसद में नहीं हैं। एक उदासी की भावना बनी रहती है। वे जिस तरह से हमारे बीच आँधी की तरह आए, उसी तरह चले गए। उनका आना जितना आकस्मिक था उनका जाना उतना ही दुखद। अभी भी संसद की गलियों में उनके पदचिह्म दिखाई पड़े हैं। उनकी ध्वनि संसद की दीवारों में इस तरह लिपट गयी है कि वे दीवारें अभी भी कुछ कहती रहती हैं। डॉ0 लोहिया वही एक व्यक्ति थे जिन्होंने भगवान को इन्सान और नेता को मानव बनाने की कोशिश की। डॉ0 लोहिया को झूठ से घृणा थी। वे झूठ बोलने वाले को इस बात का एहसास अवश्य कराते थे कि उसने झूठ बोला है जो अनुचित है। झूठ से किसी का कल्याण नहीं हो सकता है। इस प्रकार वे मनुष्य के निर्माता थे। डॉ0 लोहिया जाति प्रथा के विरोधी नेता थे उनके अनुसार परतंत्रता के कारणों में एक प्रमुख कारण जाति प्रथा भी है। जिस दिन यह जाति प्रथा समाप्त हो जायेगी उस दिन प्रत्येक मनुष्य सच्ची स्वतंत्रता की अनुभूति करेगा। उनका मानना था कि मनुष्य को स्वयं के साथ दूसरों को भी स्वतंत्र रहने के अधिकार में बाधक नहीं बनना चाहिए।

डॉ0 लोहिया का हृदय मानवीय संवेदना से ओत–प्रोत था। डॉ0 लोहिया समस्त मानव जाति के दुःख को अपना ही दुःख समझते थे। गाँधी जी की भाँति वे सदैव ही दूसरों के दुःख को दूर करने के लिए आत्म त्याग करने के लिए कटिबद्ध रहते थे। डॉ0 लोहिया का सम्पूर्ण जीवन स्वदेश एवं दलित वर्ग के उत्थान हेतु समर्पित था। डॉ0 लोहिया सामाजिक व्यवस्था के द्वारा जनता के दुःख को दूर करना चाहते थे और गाँधी के सपनों को साकार करने का भरसक प्रयत्न करते रहे। डॉ0 लोहिया ने गाँधी जी के साथ हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए अथक परिश्रम किया था। गाँधी जी की हत्या सुनकर डॉ0 लोहिया का मन चीत्कार कर उठा था और वे सोचने लगे कि जिस महान व्यक्तित्व ने आजीवन अहिंसा का प्रचार–प्रसार किया उसकी ही मृत्यु हिंसा से हुई यह कैसी विडम्बना है। कहीं ऐसा तो नहीं यह घटना भारत के अधः पतन का प्रारम्भ तो नहीं है।

रोटी और सभ्यता के द्वंद्व पर विचार करते समय डॉ0 लोहिया ने इशारा किया कि जिस देश में मकान सुअरबाड़े बनते हैं, जहाँ भूख की यातना से मानव पशु बनते हैं जहां जिंदगी बिताने और श्रम बचाने के लिए झूठ आवश्यक हो जाता है वहां सम्पत्ति की सारी भाषा औपचारिक या बेरहमी की बनती है। अटलांटिक और सोवियत साम्राज्यों के संघर्ष ने रोटी और सभ्यता का द्वंद पुनः खड़ा किया है। सोवियत को रोटी के प्रतिनिधत्व का फायदा मिला है। दो तिहाई दुनिया को वे कहते हैं कि रोटी पर विजय पाने तक सभ्यता को रुकना चाहिए। ऊपर से यह निदान सत्य प्रतीत होता है लेकिन उसके पीछे भारी गलती छिपी हुई है। रोटी और संस्कृति के द्वंद्व की निर्गुण रूप में बहस करने के बदले दो तिहाई भूखी दुनिया से उसका संबंध जोड़ना चाहिए। वहाँ रोटी और सभ्यता अविभेद्य है एक को रोकने से दूसरी भी रोकी जाती है। रोटी की रूचि और परिणाम संस्कृति के गुणों पर निर्भर रहते हैं और इसका ठीक उल्टा भी सच है। आर्थिक विकास के संबंध में चर्चा करते हुए डॉ0 लोहिया ने कहा ''उच्च जाति की अकर्मव्यता और कनिष्ठ जाति का आलस्य खत्म करने और मृत प्राय देहातों को सजीव बनाने की दृष्टि से जमीन का बंटवारा होना चाहिए।''

डा0 लोहिया शाकाहारी थे और गांधी जी की तरह सात्विक करुणा को सर्वाधिक महत्त्व देते थे। यद्यपि डा0 लोहिया विचार–स्तर पर उदार मानवीयता के पक्ष में थे तथापि डा0 लोहिया उग्रता व संकल्प को उसके साथ सम्बद्ध कर चलते थे। गांधी जी यहीं उनसे भिन्न थे। गांधी जी का उग्रता से सरोकार नहीं था। गांधी जी एक वक्त में एक काम सम्पूर्ण शक्ति से करने के पक्ष में थे। नेहरू की उग्रता लोहिया की पसन्दगी थी। लोहिया, गांधी जी जमीन पर गहरे तल पर पहुँचकर खड़े थे। उन्होंने अहिंसा को सिद्धान्त रूप में लिया था, विवशता या मात्र नीति के रूप में नहीं। यों कहें कि नेहरू में कहीं गहरे में डर बैठ गया था, वह जोखिम उठाने के पक्ष में नहीं थे और गाँधी तथा डा0 लोहिया बेखौफ योद्धा थे। ईसा मसीह की तरह से सदैव चुनौती से भरे विमुक्त।

अन्य सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शरण शंकर–विखंडन की संस्कृति, संपादकीय,जनसत्ता समाचार पत्र, 31 दिसंबर 2011
- पाठक नरेन्द्र–कर्परी ठाकुर और समाजवाद–मेधा बुक्स–एक्स–11 नवीन शाहदरा दिल्ली–110032,प्र सं.2008
- सिंह डॉ0 नामवर द्वारा मार्च 2010 को नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य पर आधारित
- त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की

आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011

- शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996
- वर्मा श्रीकांत रचनावली,खंड–3
- कथाक्रम, अप्रैल–जून 2011
- कपूर मस्तराम–डॉ0 राममनोहर लोहिया, वर्तमान संदर्भ में, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009
- दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाhधी मार्ग,इलाहाबाद–211001,पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–डा0 लोहिया : इतिहास–चक्र (*Wheel of History*),लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,संस्करण :1992
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- भाटिया पी.आर.–भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ.प्र)
- कुमारआनन्द,कुमार,मनोज–तिब्बत,हिमालय ,भारत,चीनऔरडॉ0राममनोहरलोहिया–अनामिकाप्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण–2013
- पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.)
- मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- *The Secret Film, www.Thesecret.tv* (रहस्य)
- सिंघवी लक्ष्मीमल्ल–साहित्य अमृत, संपादक,अक्टूबर 2007
- कथाक्रम–डॉ0 लोहिया–मार्क्स, गाँधी, सोशलिज्म–अक्टूबर–जून 2011
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009

Copyright © 2017, Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.